मार्केट

सेंसेक्स	26,007.30	
पिछला 25,678.93	+328.37	
निफ्टी	7,962.65	
पिछला 7,855.05	+107.60	
सोना (स्टैंडर्ड)	29,195	
पिछला 29,262	अंतर-67	
चांदी (999)	40,239	
पिछला 40,102	अंतर+137	

अशोक लवासा वित्त मंत्रालय में व्यय सचिव नियुक्त पेज 13

कैनविज टाइम्स

सिर्फ सच

वर्ष 3 अंक 95 पृष्ठ 16 मूल्य ₹ 3.00

लखनऊ व बरेली से प्रकाशित

भारत ने चीनी मोबाइल पर लगाया बैन 13

बुधवार, 27 अप्रैल 2016
बरेली
वैशाख कृष्ण पक्ष पंचमी, विक्रम संवत 2073

कैटरीना कैफ इस बार नहीं करेंगी कान फिल

साइंस सिटी में लगी शैल चित्रों की प्रदर्शनी

आंचलिक विज्ञान नगरी में शुरू हुई पांच महाद्वीपों के शैल चित्रों की प्रदर्शनी

प्रदर्शनी

- बीएसआईपी और आईजीएनसीए की ओर से लगाई गई प्रदर्शनी

कैनविज टाइम्स ब्यूरो

लखनऊ। शैल चित्रों की मदद से मानव सभ्यता के इतिहास की जानकारी मिलती है। यह शैल चित्र विश्व के सभी महाद्वीपों पर पाये जाते हैं। इन सभी शैल चित्रों में असाधारण समानता दिखाई देती है। इनके माध्यम से लगभग 40 से 50 हजार वर्ष पहले की मानव सभ्यताओं के बारे में सूचना मिलती है। ऐसे ही लगभग 100 शैलचित्रों की प्रदर्शनी साइंस सिटी अलीगंज में मंगलवार से लगाई गई है वह प्रदर्शनी 17 मई तक चलेगी।

आंचलिक विज्ञान केंद्र में लगी प्रदर्शनी को देखते बच्चे। कैनविज टाइम्स

शैल चित्रों की प्रदर्शनी का उद्घाटन बीरबल साहनी इंस्टीट्यूट ऑफ पैलियोसाइंसेज (बीएसआईपी) के निदेशक प्रो.सुनील बाजपेई ने प्रदर्शनी का शुभारंभ किया। कार्यक्रम के आयोजक इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर फॉर द आर्ट्स (आजीएनसीए), नई दिल्ली के प्रोजेक्ट कॉर्डिनेटर डॉ.बीएल मल्ला और नेशनल रिसर्च लैब फॉर कंजर्वेशन ऑफ कल्चरल प्रॉपर्टी के महानिदेशक डॉ.बीवी खड़बड़े भी मौजूद रहे। डॉ.मल्ला ने बताया कि पूरी दुनिया के शैलचित्रों पर शोध से यह पता चलता है कि वैश्विक रूप से इंसान का मूल चिंतन एक जैसा है। मानव सभ्यता जहां भी रही हो, उनकी सोच और व्यवहार एक जैसा ही रहा होगा। शैलचित्रों में उनका व्यवहार, मनोरंजन, शिकार करने के तरीके, खान-पान आदि को बखूबी तराशा गया।

डॉ.मल्ला ने बताया कि यूरोप और ऑस्ट्रेलिया में शैलचित्रों के शोध के लिए गंभीरता है। वहीं अब भारत में भी इन शैलचित्रों के लिए गंभीरता बढ़ रही है। यूपी में ही बीएसआईपी की मदद से सोनभद्र, मिर्जापुर, रॉबर्ट्सगंज, इलाहाबाद जैसी जगहों पर शैलचित्रों का डाटाबेस बनाने के अलावा इनके संरक्षण के लिए प्रयास शुरू किए हैं। इन साइटों का संरक्षण बेहतर तरीके से हो। इसके लिए जरूरी है कि स्थानीय लोग और प्रशासनिक अधिकारी जागरूक हों। उन्हें शैलचित्रों की बखूबी जानकारी हो। यह काम प्रदर्शनी के जरिए आईजीएनसीए कर रहा है।

प्रदर्शनी के मुख्य आकर्षण रहे

- युद्ध का दृश्य, अमीरगढ़, गुजरात
- युद्ध का दृश्य, कुंजोटा, जयपुर, राजस्थान
- उड़ीसा की एक जनजाति की शैलचित्र के आधार के साथ बनी झोपड़ी
- शेर और हाथी का चित्र, आसाम
- जानवरों के चित्र, सोनभद्र, यूपी
- मानवीय आकृतियां, एडाकोल, केरल
- व्हाइट लेडी, साउथ अफ्रीका
- किलिंग ऑफ रेनबुल, साउथ अफ्रीका।